BHABHA INSTITUE OF EDUCATION (४)

C-05 Understanding Disciplines & Subjects

Unit-05

* Role of disciplinary knowledge in overall scheme of school curriculum.

Ans:- John Dewey (1859-1952)

डीवी ने शिक्षा प्रक्रिया को शिक्षक,
शिक्षार्थी प्रयोजनवाद के मूल प्रवर्तक
पाठ्यक्रम विलियम जेम्स थे।
डीवी ने स्कूल खोला जिसे Progressive
School कहा। डीवी को हम मुख्यतया
व्यावहारिकतावादी मानते हैं। उन्होंने संयुक्त
राज्य से बाहर भी शिक्षा पर वक्तव्य दिये हैं
विशेषकर चीन में तथा उनका प्रभाव
विश्व व्यापी है। उन्होंने एक प्रयोगशाला
स्कूल (1896) खोल दिया। इस स्कूल
को खोलने का प्रयोजन यह था कि यहाँ
दर्शन, मनोविज्ञान तथा शिक्षा के सिद्धान्तों का
प्रयोगशाला से ठीक वैसे होता है।

14 WED डीवी की रचनाऐं :- (2)

MAR '07

Democracy and Education
- The School & Socity
- School of tomorrow
- The School and child
- Freedom & Culture
- How We Think
- Human nature & Conduct
- The child & the Curriculum
- Experience and Education

Interest and Effect in Education

15 Dewey of Problem Solve method is

डीवी का प्रयोजनवाद है।
डीवी के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया अनुभव है।
डीवी बालक द्वारा विद्यालय में सामाजिक अनुशासन पर बल अधिक देते है।
डीवी बालक द्वारा विद्यालय में परिवर्तन ही मनुष्य सत्य है।
हम कैसे सोचते है? इस विषय में डीवी की देन महत्वपूर्ण है।

C-05 Understanding disciplines & Subjects

ड्यूवी के दर्शन की मुख्य विशेषताएँ

1) साध्य से साधन अधिक महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में परिवर्तनशील विश्व में साध्य को पूर्व निश्चय असम्भव है। बहुत से कार्यों का जोड़ उद्देश्य हो जाता है। उद्देश्य साधन नहीं है। वरन् साधन महत्वपूर्ण है। अरस्तू के दर्शन के विपरीत यह सिद्धांत नवीन तथा अद्भुत है।

2) परिवर्तन ही मूल सत्य है।

3) विचार कर्म से उत्पन्न हैं। कर्म द्वारा ही "प्रयोग तथा मूल पद्धति के अनुसार हम सत्य को प्राप्त करते हैं। तथा इसी के कारण एक विचार उत्पन्न होता है। हम काम पहले करते हैं, तथा सोचते बाद में हैं। कर्म द्वारा ही ज्ञान प्राप्त होता है।

4) वही ज्ञान ऐसा उचित है। जो उपयोगी हो तथा साधन रूप हो। जैसे हरबर्ट स्पेन्सर की भाँति वह कम उपयोगी तथा अधिक उपयोगी ज्ञान के पक्ष में नहीं है। फिर भी अनावश्यक ज्ञान से आवश्यक ज्ञान को वह अधिक महत्व देते हैं।

5) छात्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा योजना पद्धति का निर्माण हुआ है। बालक की आवश्यकता की अनुभव करकर, उसी के प्रयोग योजना पद्धति कार्य रूप में परिणत की जाती है।

6) प्रजातन्त्र डीवी के लिए एक आवश्यकता है। वह स्वतन्त्र से सदैव ही श्रेष्ठ है। आत्म-निर्भरता तथा रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास इसी राजनीतिक व्यवस्था में सम्भव है।

7) साध्य में विश्वास न करके साधन में विश्वास करने के कारण इसके दर्शन को नैमित्तिकवाद की संज्ञा मिली है। नैमित्तिक वस्तु वह है जो कि किसी दूसरे के लिए साधन स्वरूप में प्रयुक्त हो तथा उसे सफल बनाने में सहायता करे। 'कला कला के लिए' तथा 'ज्ञान ज्ञान के लिए' पर उनका विश्वास नहीं है। उनका विश्वास है कि प्रजातन्त्र ही स्थायी शासन व्यवस्था है। यह परिवर्तन पर आधारित है। इस परम्परा विरोधी विचारधारा पर डीवी का विश्वास है।

8) निगमन को वह गौण मानता है। तथा उसका विचार है कि आगमन द्वारा ही हम उचित तथ्यों पर पहुँचते हैं।

(5)

MAR '07

23 FRI

9) प्रयोगों द्वारा ही सत्य की उत्पत्ति होती है प्रयोगों पर ही समाज की उन्नति निर्भर है। औद्योगिक विकास का कारण ही प्रयोग है। प्रयोगों पर इतना अधिक विश्वास तथा बल ही इसी कारण से है उनके दर्शन का दूसरा नाम इसी कारण प्रयोगवाद भी पड़ गया है।

11) डीवी तथा स्पेंसर कला को क्षतिपूरक मानते है। शरीर के किसी अंग की कमी किसी न किसी प्रकार प्राकृतिक रूप से पूरी हो ही जाती है। इसी प्रकार कलाकार अपनी कुरूपता तथा अंग भंगो की विच्छिन्नता को कला द्वारा पूरा करता है। अर्थात कला का जन्म स्वस्थ व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है। साथ-2 यदि कला का प्रयोग होना है तो वह व्यर्थ है।

24 SAT

12) डीवी धर्म को वास्तविकता तथा प्रयोगात्मक तत्वों से दूर होने के कारण अधिक महत्व नहीं देता। कतिपय विद्वानों का मत है कि धर्म भावना की उड़ान तथा असीम से मिलने की सहज कल्पना पर आधारित स्वयं विचार है। किन्तु इसकी कसौटी क्या है उसकी

SUNDAY

FEB '07
W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T